सम्राट् सम्प्रति

पाटलीपुत्र में आज सम्राट् अशोक का विजयोत्सव मनाया जा रहा है। विशाल राजसभा के बीच एक ऊँचे सिंहासन पर सम्राट् अशोक आसीन हैं। दोनों तरफ अमात्य, रामपुरोहित, सेनापति तथा अन्य सामन्तगण एवं हजारों नागरिक बैठे हैं। तभी सन्देशवाहक ने सोने के थाल में रखकर पत्र भेंट किया—

राजा ने लिपिकार को आशीर्वाद पत्र लिखने का आदेश दिया और विश्राम करने राजमहल में चले गये।

कुछ देर बाद लेखपाल पत्र तैयार करके ले आया। सम्राट् ने पत्र पढ़ा, उसके नीचे अपने हाथ से एक पंक्ति और लिखी—

फिर राजमुद्रा लगाकर पत्र वहीं रख दिया।

भोजन का समय हो गया था। सम्राट् पत्र वहीं छोड़कर भोजनगृह की ओर चल दिए। रानी तिष्यरक्षिता ने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। उसने एक सलाई ली, आँखों के काले अंजन को सलाई पर लगाया, और महाराज के संदेश पर एक बिन्दु लगा दिया।

फिर पत्र वापस रखकर चुपचाप भोजन कक्ष की ओर चल दी।

1. कुणाल सम्राट् अशोक की सबसे बड़ी रानी का ज्येष्ठ पुत्र था। मृत्यु के समय रानी को महाराज ने वचन दिया था—कुणाल ही मौर्य साम्राज्य का उत्तराधिकारी होगा। तिष्यरक्षिता आदि अन्य रानियाँ कुणाल को मारना चाहती थीं। उसकी जीवनरक्षा के लिए महाराज ने पाटलीपुत्र से दूर अवन्ती में कुणाल को रखा ताकि उसे कोई हानि नहीं पहुँच सके।

कुछ समय पश्चात् सम्राट् ने दूत के साथ पत्र अवन्ती भेज दिया। दूत पत्र लेकर अवन्ती पहुँचा। सभा में मंत्री ने पत्र पढ़ा। पत्र पढ़ते ही मंत्री को साँप सूँघ गया। कुणाल ने पूछा–

चाचाजी, पत्र में ऐसी क्या बात लिखी है? जिसे पढ़कर आप एकदम चुप हो गये। कृपया हमें बताइए पिताश्री ने क्या लिखा है?

मंत्री ने कठोर हृदय करके पत्र पढ़ा–

महाराज ने लिखा है–

अंधीयतां कुमारः। (कुमार को अंधा कर दिया जाय)

हे भगवान ऐसा कठोर आदेश।

क्या?

सारी सभा में सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

कुणाल ने कहा–

पिताश्री की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। लाइये लोह शलाका लेकर मेरी आँखें फोड़ दीजिए।

और कुणाल ने गर्म लोहे की सरिया लेकर अपनी आँखों में भर लिए।

सभा शोक मग्न हो गई।

नगर में गली-गली में लोग कहने लगे–

अरे ! सुना है राजकुमार ने पिता की आज्ञा से आँखें फोड़ लीं।

सम्राट् अशोक ऐसा आदेश नहीं दे सकते। एक पिता पुत्र को अँधा करने का आदेश कैसे दे सकता है?

हमें तो इसमें कुमार की सौतेली माताओं की चाल लगती है।

रानी तिष्यरक्षिता ने "अधीयतां कुमार" को "अंधीयतां कुमार" कर दिया था।

कुछ समय बाद सम्राट् अशोक के पास दूत समाचार लेकर आया–

आपकी आज्ञा से राजकुमार कुणाल ने अपनी आँखें फोड़ लीं हैं।

हैं ! मैंने ऐसी कठोर आज्ञा कब दी?

दूत ने महाराज को पत्र दिखाया तो वे चौंक गये–

अधीयतां को अंधीयतां किसने कर दिया? कब किया? कौन छिपा शत्रु है यह?

सम्राट अशोक दुःख के सागर में डूब गये।

इधर अवन्ती में अँधा कुणाल धाय माता सुनन्दा की देख-रेख में पलने लगा। अँधेपन के एकाकी जीवन में कुणाल ने तानपूरे को अपना साथी बना लिया। वह एकान्त में तानपूरा बजाता रहता और प्रभु आदिनाथ की भक्ति करता रहता।

जय आदिनाथ जग हितकारी जय वीतराग मंगलकारी .....

समय अपनी गति से चलता रहा।

एक दिन कुणाल की धाय माता सुनन्दा ने सम्राट् अशोक को पत्र भेजा। सम्राट् ने पत्र पढ़ा–

महाराज अशोकवर्द्धन के चरणों में सुनन्दा का प्रणाम। कुमार कुणाल अब बीस वर्ष का हो गया है। दिन-रात एकाकी प्रभुभक्ति में अपना नीरस जीवन बिता रहा है। निवेदन है किसी योग्य राजकुमारी के साथ कुमार का विवाह कर दिया जाय तो उसके सूने जीवन में फिर से बहार आ सकती है।